आभास

वर्ष 01 । अंक 04 । सितम्बर-अक्टूबर 2024 । मूल्य : सौ रुपये

मेघा रे मेघा रे

RHYVERS PUBLISHING GROUP®

The Energy that flows

OUR PRINT LINES

RHYVERS

RHYVERS PRESS

RHYVERS ONE

आभास प्रकाशन

OUR PUBLICATIONS

आभास
Quartely Hindi Magazine

RHYVERS BEAT
Monthly Literary Magazine

ਲਫ਼ਜ਼ਨਾਮਾ
Quarterly Punjabi Magazine

OUR PORTALS

RHYVERS — THE ENERGY THAT FLOWS — ENGLISH

RHYVERS اردو — THE ENERGY THAT FLOWS — URDU

RHYVERS हिंदी — THE ENERGY THAT FLOWS — HINDI

RHYVERS PUBLISHING GROUP®

CORPORATE HEADQUARTER : 1515 Pataudi House, Daryaganj, New Delhi-110002

mail@rhyvers.com 91 78300 15300

rhyvers.com rhyvers.press rhyvers.media rhyvers.in rhyvers.net

ISO 10002:2018 CERTIFIED COMPANY · ISO 9001:2015 CERTIFIED · ISO 14001:2015 CERTIFIED COMPANY

@therhyvers

NEW DELHI • CHANDIGARH • SRINAGAR • BANGALORE

आभास

राइवर्स पब्लिशिंग ग्रुप की एक पहल

वर्ष 01 | अंक 04

सितम्बर-अक्टूबर 2024 | मूल्य : सौ रुपये

मुख्य संपादक
अफ्फान येसवी

कार्यकारी संपादक
सीमा गुप्ता

परामर्श संपादक
रजनी शालीन चोपड़ा

फीचर संपादक
प्रीति एस. मानकतला

क्षेत्रीय संपादक - कनाडा
अनुराधा ग्रोवर तेजपाल

स्वामित्व, मुद्रित और प्रकाशन
राईवर्स प्रकाशन समूह

प्रकाशित एवं मुद्रित
राइवर्स प्रेस, 1515 पटौदी हाउस,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सभी पत्राचार के लिए पता
राइवर्स प्रेस, 1515 पटौदी हाउस,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
ईमेल: rhyverspress@gmail.com

राईवर्स प्रकाशन समूह
rhyvers.com, rhyvers.in
rhyvers.net, rhyvers.press
http:// रिवर्स.भारत

editor@rhyvers.com

91 78300 15300
91 120 3640160

@therhyvers

सर्वाधिकार सुरक्षित
संपूर्ण या आंतरिक रूप से प्रजनन लिखित अनुमति के बिना भाग वर्जित है

सभी विज्ञापन पूछताछ, टिप्पणियों और फीडबैक का स्वागत है:
mail@rhyvers.com

आवधि : **मासिक**
भाषा : हिन्दी
कीमत : ₹100

इस पत्रिका में मौजूद जानकारी की सटीकता के लिए समीक्षा की गई है और इसे विश्वसनीय माना गया है, लेकिन संपादक द्वारा आवश्यक रूप से पूर्ण या गारंटीकृत नहीं है। इस डाइजेस्ट में व्यक्त किए गए विचार पूरी तरह से लेखकों के हैं और जरूरी नहीं कि वे राइवर्स प्रेस के विचारों को प्रतिबिंबित करते हों।

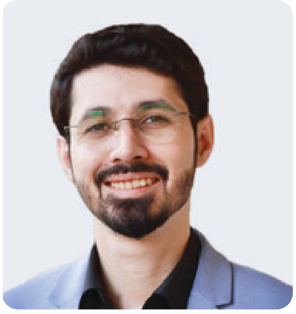

समूह संपादक के डेस्क से

आभास की यात्रा निरंतर जारी है, आप सबके साथ और सहयोग से। ज़िंदगी जैसे चलने का नाम है वैसे ही **आभास यानि एहसास** भी निरंतर महसूस किए जाते हैं, जिन्हें लेखक अपने शब्दों में पिरोकर कविता, कहानी, गीत, ग़ज़ल में ढालते हैं और हम अपनी पत्रिका में उन्हें प्रकाशित करके गर्व अनुभव करते हैं।

साहित्य के प्रति रुचि, पढ़ने लिखने की लग्न ही साहित्यकार को नई नई कृतियाँ लिखने, समाज के प्रति अपनी पैनी दृष्टि रख उसे रचनाओं में ढालने को बाध्य करती है और वो सार्थक सृजन से समाज में यथोचित बदलाव ला पाने का माध्यम बनते हैं। हम सब जानते हैं जब जब कोई संकट मानवता पर आता है साहित्यकार उनसे कभी अछूता नहीं रह पाता वो अपनी रचनाओं से सोयी मानवता को जगाने के प्रयास में लगा रहता है और ज़मीर जागते हमने देखे भी हैं।

ख़ैर वक़्त गुज़रता है, उसे गुजरना ही है लेकिन हम उस वक़्त को कैसे गुज़ारते हैं ये सोचने की बात है। हम अपनी इस पत्रिका के माध्यम से वक़्त के गुजरे पलों को कैद कर रहे हैं, आपके शब्दों से गुलज़ार कर रहे हैं। आप सब लोग पत्रिका को अपना और प्यार दें, इसके प्रचार प्रसार में योगदान दें। अपने सुझाव भी हम तक पहुँचाएँ ताकि ख़ुशियों का आदान-प्रदान यूँ ही चलता रहे।

नए साहित्यकारों का पथ प्रदर्शन हो और उनका प्रोत्साहन करें। निरंतर साधना में रत रहें और कलम की धार को पैनी करते रहें।

जुड़ें और जोड़ें आभास से।

धन्यवाद

अफ्फान येसवी

कार्यकारी संपादक के डेस्क से

किताबों में झुके सर ज़िंदगी भर उठे रहते हैं......

सीमा गुप्ता
पंचकूला

अक्षरशः सत्य है यह उक्ति। बचपन खेल में खो जाता है, जवानी नींद में गुजर जाती है और बुढ़ापे में आदमी रोने लगता है लेकिन अगर बचपन से किताबों के साथ दोस्ती हो गई तो उम्र का हर पड़ाव बेहतर, सार्थक और सफल गुजर सकता है। हमें ख़ुशी है कि हम और हमारे साहित्यकार, सुधि पाठक किताबों की महक में सराबोर रहते हैं, शब्दों की जादूगरी से चौंकाते रहते हैं। भाषा से और भाषा को और समृद्ध करते रहते हैं। संवेदनशील हृदय ही समाज के हर सुख दुःख को गहराई से महसूस कर अपनी रचनाएँ बुनते हैं और पाठकों के दिलों में अपनी जगह बना लेते हैं।

ये अंक **मेघा रे मेघा** हमेशा की तरह बहुत सुंदर रहा, मेघ ख़ूब बरसे, कभी प्यार में, कभी इंतज़ार तो कभी विरह में तरसे। मेघ जब बरसते हैं तो सालों से सूखी ज़मीन को राहत मिलती है, प्रकृति झूम उठती है और लेखक अपनी कृतियों के माध्यम से हम सबके मनों को भिगो देता है। ऐसी ही सोंधी, भीगी भीगी रचनाएँ हम तक पहुँची, कुछ हम भीगे कुछ आप भीगें और बारिश में उठती मिट्टी की सौंधी खुशबू हम सब तक पहुँचाएँ कि कोई भी मन रूखा सूखा न रह जाए। कुछ रचनाएँ हम नहीं ले पाए कईं कारण होते हैं, दोहराव भी एक मुख्य कारण रहता है कि हम चाहते हैं नए लेखकों को भी हम जोड़ पाएँ।

इस बार हमारा सौभाग्य कि हम जान पाए वरिष्ठ साहित्यकार कुमार कृष्ण को, जो एक नामवर कवि, आलोचक होने के साथ एक संवेदनशील व्यक्तित्व भी हैं। उनका हृदय से आभार कि उन्होंने बातचीत के लिए वक़्त निकाला।

आदमी उम्मीद से दिल बहलाता रहता है और तमन्नाओं के गहरे सागर में ताउम्र डूबता उतरता है, कई तरह से सोचता, योजनाएँ बनाता जीवन बीता देता है। आज के इस मुश्किल, दौड़ते भागते दौर में अगर सुकून पाया जा सकता है तो केवल किसी कला से जुड़कर। जो लोग साहित्य से या अन्य किसी कला से जुड़े हैं उन सबको ढेर बधाई।

अगले अंक का विषय **'जाड़े की गुनगुनी धूप'** के गुनगुने ताप के आनन्द में सराबोर हों और करें।

जुड़े रहें और जोड़ते रहें **आभास** से।

धन्यवाद

कार्यकारी संपादक
सीमा गुप्ता

अनुक्रमणिका

बरसते पत्थर	सुभाष भास्कर	4
डूबना	अनिता 'सुरभि'	5
काहे सताये रे मेघा...	डा० अनीश गर्ग	6
पुस्तक समीक्षा : उद्‌गार	सीमा गुप्ता	7
मनभावन सावन	हरप्रीत कौर बवेजा	10
मेघा ओ मेघा	परमिंदर सोनी	11
शहर बारिश में दरया हो गया	अशोक 'अंजुम'	12
अशोक 'अंजुम'	नलिन खोइवाल	13
या मेरे ग़म की तू दवा दे दे	धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'	14
कोई उलझन न कोई मसला	डॉ मृदुल शर्मा	15
साक्षात्कार : कृष्ण कुमार	सीमा गुप्ता	16
अधूरा इश्क	शहनाज़ भारती	21
फ़िल्म समीक्षा : चंदू चौंपियन	निशांत कुमार श्रीवास्तव	22
आंगन का सौदा	रेखा मित्तल	24
काला महीना	प्रमोद कुमार हर्ष	25
रिम–झिम का मौसम	प्रोफ़ेसर विनोद नाथ	29
बादल के बीज	डॉ. सुनीत मदान	30
धरती	डॉ. रितु भनोट	32

बरसते पत्थर

सावन तो बहुत मदमस्त आया करता था
कल-कल बहते शीतल जल के
झरने लाया करता था
रसीले आम चुपाया करता था
लगती थी झड़ी, बनते थे खीर पूड़े
पीपल पर झूले झूलती थीं किशोरियाँ
चारों तरफ छा जाती थी हरियाली
खिल उठती थी धरा

अब के कैसा सावन आया
रुठा रुठा, दबंग सा, कौंधती बिजली
गरज रहे डरावने बादल
फट रहे हैं पहाड़ों पर
तेज मूसलाधार मानसूनी बारिश
बरसा रही है कहर, करती मृत्यु तांडव
डूब गए घर, भीग गए चूल्हे
बह गया है ईंधन, भूख के सताए
पानी में फंसे हैं लोग
पानी की एक-एक बूंद को प्यासे

क्यों हो रहा भूस्खलन
पत्थरों की बरसात
किसने घोंपा है पहाड़ की पीठ में बारुद
अवसादी चट्टानें टूटकर
गिर रही हैं सड़कों पर
मलबे में फंसे वाहनों में दबे लोगों
की चीखें चिल्ला चिल्लाकर पूछ रही हैं
भूकंपों से हुई कमज़ोर ये चट्टानें
या मानवीय करामातों से

देना ही होगा हमें जवाब
बंद करनी होगी कुदरत से छेड़छाड़
वरना भरनी होगी चट्टी
हमारी आने वाली पीढियों को

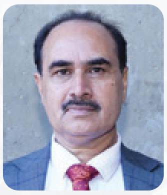

सुभाष भास्कर
वरिष्ठ
साहित्यकार
चंडीगढ़

डूबना

फक़त पानी में डूबना ही कोई डूबना नहीं होता,
जीवन में
हर कोई
कहीं ना कहीं
डूबता जरूर है-
और
डूबने के भी अंदाज होते हैं,
बेहिसाब—

कोई क़र्ज़ में,
कोई फर्ज में,
तो कोई
मदिरा के मद में,
कोई सबसे होकर बेख़बर
डूबा है परमार्थ में—

तो कोई डूब जाता है
स्वार्थ में
कोई डूबा वासना में
कोई उपासना में
कोई डूबा प्रेम के जल में,
तो कोई डूब गया घृणा की
दल दल में
कोई आगत में,
कोई अनागत में,
कोई अभिलाषा में
कोई ज़िल्लत मे
तो कोई दिलासा में
डूब गया—

किसी को मौत नहीं आती सागर की रवानी में
तो कोई डूब जाता है चुल्लू भर
पानी में
डूबने के भी होते हैं
कुछ निश्चित नियम
और होता है अपना एक
वैज्ञानिक सिद्धांत
जैसे,

अपनी सार्थकता के साथ
सूरज,
समग्र सृष्टि को उजाला देकर
सागर की गोद में समा
जाता है—

तो कोई बनावटी चकाचौंध में ही डूब जाता है,
और कोई अपने को
पाने की चाह में
खो देता है
अपने अस्तित्व को,
किसी की आँखों में—

डूबने का भी एक
भौतिक सिद्धांत होता है,
डूबने के लिए
अपने फैलाव व बिखराव को—

कोने-कोने से
समेट कर
निखरी हुई
शबनम की बूँद सा किसी के
मन में बस जाना भी तो,
एक तरह से डूब जाना ही होता है—

डूबने का अपना एक अंदाज़ होता है,
डूबने का एक सिद्धांत होता हैं—

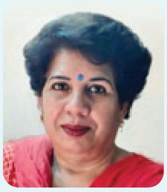

अनिता 'सुरभि'
वरिष्ठ
साहित्यकार
चंडीगढ़

काहे सताये रे मेघा...

रिमझिम बदरा बरस रहे
हम सजनी को तरस रहे...
बैरी मौसम बड़ा तड़पाए
मेघा बिन सब अरस रहे...

बरसे बदरा बरसे अखियां
मुझपे हंसें हैं तेरी सखियां,
ना भावे बूंदों की छम छम
श्रुतिपट भावें तेरी बतियां,
यादें निगोड़ी छू कर जाएं
सजनी अक्स अपरस रहे...
मेघा बिन सब अरस रहे...

सुस्त पड़े गये सावन झूले
मस्त हो जाएं जो तू छू ले,
सूना पनघट सूनी गलियां
पांव तुम्हारे क्यों राहें भूले,
तुम बिन कैसी बरखा प्रिय
'अनीश' इसको अबस कहे...
मेघा बिन सब अरस रहे...

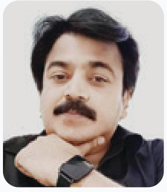

डा० अनीश गर्ग
कवि व लेखक
चंडीगढ़

(अरस: बिना रस के, श्रुतिपट: कान,
अपरस: जो स्पृश ना हो सके, अबस: व्यर्थ)

साहस, इच्छाशक्ति और साकारात्मक सोच के ताने बाने से बुनी मज़बूत रचनाएँ

पुस्तक : **उद्गार (काव्य संग्रह)**

कवयित्री : **सारिका धूपड़** | समीक्षा : **सीमा गुप्ता**

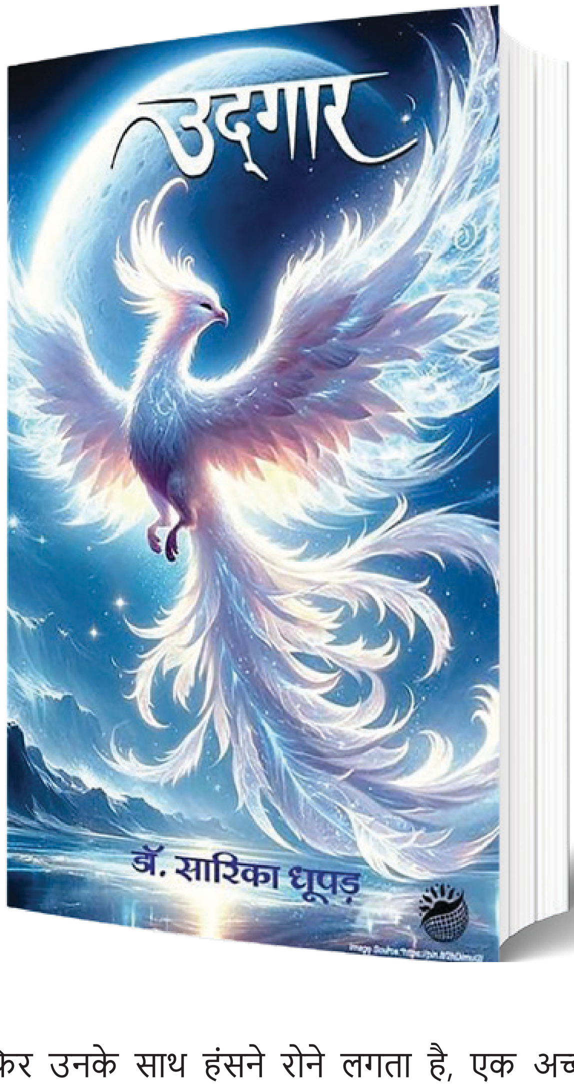

स्त्री के स्वभाव में ही है निश्छलता, प्रेम, दया और करुणा और ज़िम्मेदारी लेना परिवार, समाज की। जाने अनजाने वो माँ, शिक्षक, बहन, बेटी, पत्नी के रूप में वो हर संभव सीखने, सीखाने को उद्यत रहती है और यही स्त्री जब कविताएँ लिखती है तो हर संभव ख़्याल रखती है कि अपनी ज़िम्मेदारी का निर्वहन अच्छे से कर सके, बहुत प्रेम से बहुत करुणामयी, वात्सल्यपूर्ण रचनाएँ रचती हैं। स्त्रियाँ सरल से शब्द, सरल सी बातें करती हैं, भारी भरकम बोझ से लदेफदे शब्द इस्तेमाल नहीं करती, मानती हैं इस बोझ से दब जाते हैं अहसास और तोड़ देते हैं दम।

ऐसा ही सारिका धूपड़ का दूसरा काव्य संग्रह "उद्गार" है जो बेहद संवेदनशीलता से लिखा गया है, निश्छल मन की अभिव्यक्ति है। ज़िंदगी अनेक अधूरी कहानियों का एक उपन्यास है, हर चेहरा एक कहानी है, अक चलता फिरता, हंसता खेलता किरदार होता है जो सुख दुख, दर्द, ख़ुशी भीतर संजोए रहता है पहली कविता **'अद्भुत कहानियाँ'** संसार के हर एक व्यक्ति के लिए है और ऐसा हर एक इंटलैक्चुअल के साथ होता है कि उसे हर व्यक्ति एक कहानी सुख दुख की महसूस होता है जिनसे वो जान अनजाने प्रभावित हो जाता है और उनसे जुड़ जाता है फिर उनके साथ हंसने रोने लगता है, एक अच्छी कविता है।

'मील का पत्थर' मानो उनकी ही कविता है क्योंकि वो जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखकर आगे बढ़ती आईं हैं और अभी तो सफर की शुरुआत है एक

सच्ची अभिव्यक्ति है। यादें ये स्मृतियाँ ही मनुष्य की धरोहर होती हैं, इनसे ही जीवन है, बचपन, यौवन की अपनी मधुर स्मृतियाँ होती हैं जिन्हें हर मन बार बार सोचता है,फिर फिर जीता है, सारिका भी **यादों की पोटली** खोलती हैं, उमंगती हैं, खिलती हैं, मुस्कुराती हैं जो बीत गया सो बीत गया, अफ़सोस नहीं करती, यथार्थ की ज़मीन पर रहते हुए सच को स्वीकार कर अपनी साकारात्मक सोच से परिचय करवाती हैं।

'बदलती रहूँगी / बढ़ती रहूँगी / सँवरती रहूँगी भी एक उत्तम, सच्ची सुंदर और आज के वक़्त के लिए एक ज़रूरी कविता महसूस हुई जिसमें समय के साथ चलने की बात हुई है क्योंकि जो समय के साथ बदलता नहीं वो एक दिन हाशिये पर चला जाता है और नष्ट हो जाता है चाहे वो मनुष्य हो, देश हो, संस्कृति हो या भाषा।

कभी ये हँसाये, कभी ये रूलाये, ज़िंदगी की ये परिभाषा बताती एक छोटी कविता **ज़िंदगी** एक प्यारी रचना है।

अध्यापिका हैं तो **इम्तिहान** बहुत से लिए होंगे, मनोविज्ञान भी बख़ूबी पेश करती हैं इस कविता में,

> **स्त्रियाँ बहुत संघर्षों से जूझती हुई आगे बढ़ती हैं, दफ़्तर में, समाज में कभी कभी परिवार से भी साथ और सहयोग की कमी रह जाती है लेकिन सारिका धूपड़ बहुत सौभाग्यशाली हैं कि पति और बच्चों का बहुत सहयोग मिलता है, आगे बढ़ने की निरंतर प्रेरणा मिलती है तो वो हर जगह खुलकर सामने आ पाती हैं और अपनी पूरी क्षमता से काम को सफलता पूर्वक अंजाम दे पाती हैं।**

परीक्षा कक्ष में विद्यार्थियों के डर, चिंता, ख़ुशी, हताशा, निराशा बयान करते हुए परीक्षाओं के औचित्य कि होशियार रहो वर्ना ज़िंदगी के कठिन पर्चे कैसे हल कर पाओगे प्रेरित करती कविता है, उनका अध्यापक मन इस तरह कोमलता से अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ा। आत्मविश्वास, अपराजित साहस, जीवन की धूप छाँव को मज़बूती, साहस, इच्छाशक्ति और साकारात्मक सोच के ताने बाने से बुनी मज़बूत रचनाएँ हैं।

अभिसार से उद्गार की यह यात्रा यकीनन बहुत परिपक्व हुई है, कविताएँ और निखरकर उभरी हैं। **मन की तरंगों** ने ख़ूबसूरत साज छेड़े हैं। **आशा के फूल, रोशनी की तलाश, मशाल** उनकी उम्मीदों की लौ बनी हैं, ज़मीन से आसमान को नापने की इच्छा, चाँद सितारों को मुठ्ठी में भरने की चाहत एक नई सुबह का स्वपन दिखाती हैं और उनके खुशहाल मन की परिचय करवाती हैं।

स्त्रियाँ बहुत संघर्षों से जूझती हुई आगे बढ़ती हैं, दफ़्तर में, समाज में कभी कभी परिवार से भी साथ और सहयोग की कमी रह जाती है लेकिन सारिका धूपड़ बहुत सौभाग्यशाली हैं कि पति और बच्चों का बहुत सहयोग मिलता है, आगे बढ़ने की निरंतर प्रेरणा मिलती है तो वो हर जगह खुलकर सामने आ पाती हैं और अपनी पूरी क्षमता से काम को सफलता पूर्वक अंजाम दे पाती हैं।

कोहरा जब छाता है तो सब कुछ ढक लेता है, कितनी ही सुंदरता हो, विरूपता हो, ख़ुशियाँ हों लेकिन जब छँटता है तो चीजें और भी सुंदर, स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं **सारिका, कोहरे का मानवीयकरण** करती हुई कहती हैं कि कोहरे की भी कुछ अपनी ख्वाहिशें होती हैं जिन्हें वो अपनी ही ओट में छिपा लेता है, कुछ राज़ होंगे जो अपनी ही चादर में लिपटा विलीन कर देता है, **एक अच्छी कविता है**। सारिका कोमल

हृदय, संवेदनशील हैं तो अनुभूतियों के एहसास भी बहुत छू कर निकले हैं कविताओं में। प्रकृति से भी प्रेम है उन्हें गाहे-बगाहे कविताओं में उभर कर आया है।

दिल का रास्ता आँखों से होकर जाता है **न जाने क्यो कविता** अनजाने ही उदास कर जाती है। मनुष्य हर पल स्मृतियाँ जीता है, कभी खुश कभी उदास होता है और ख़ुशी अक्सर नटखट होती है हाथ से रेत की मानिंद फिसल जाती है। **खुशी की बाट** यही बयान करती है।

इस काव्य संग्रह में बहुत कुछ ऐसा है जो मानव मन की ज़रूरत है, उसकी बयानी है। कविताएँ बंद द्वार खोल हृदय के भीतर धीरे से प्रवेश करती हैं और कहती हैं क्यों फ़िक्र करते हो, दर्द की उम्र कहाँ लम्बी होती है? एक और सुंदर कविता है। **प्रेम पंखुड़ियाँ** आध्यात्मिक मन की तरह खिलती हैं और सच्चे मन का पता बताती हैं, मीरा के प्रति उनका प्रेम ईश्वर के प्रति उनके विश्वास और श्रद्धा को और दृढ़ करेगा। **चिरस्थायी मोहब्बत, मैं और तुम** जीवन में प्रेम की सार्थकता, ज़रूरत दर्शाती प्रेम में सराबोर कविताएँ हैं।

स्त्रियों को मन में उजाला बनाए रखने के लिये बहुत मशक़्क़त करनी पड़ती है, अंधेरे को अपनी ज़िद और जीवटता के बल पर ही हरा पाती हैं ये थोड़ा आसान तब हो जाता है जब स्त्री स्वयं को किसी कला से जोड़ ले, एहसासों की अभिव्यक्ति अगर किसी कला के माध्यम से हो जाए तो ये रोशनी औरों को भी प्रेरित करती है, सारिका जी ने कलम को अपना माध्यम बनाया जो कि एक सशक्त उपलब्धि है। मन के आँगन में जंगली फूल खिलाना है दो कि बड़ी

इस काव्य संग्रह में बहुत कुछ ऐसा है जो मानव मन की ज़रूरत है, उसकी बयानी है। कविताएँ बंद द्वार खोल हृदय के भीतर धीरे से प्रवेश करती हैं और कहती हैं क्यों फ़िक्र करते हो, दर्द की उम्र कहाँ लम्बी होती है? एक और सुंदर कविता है।

ही सुंदरता से खिले हैं उनकी इस पुस्तक **उद्गार में**। **दुख सुख** की अभिव्यक्ति अंतरात्मा की अभिव्यक्ति होती है, मैं ऐसा मानती हूँ कि कविता आपके अपने ही सवालों के जवाब आपको देती है, सुकून है कविता, ध्यान है कविता, तो निश्चित ही सारिका धूपड़ के विचारों में भी और अधिक परिपक्वता, स्पष्टता आई होगी और वो हर मायने में और बेहतर होकर निखरी होंगी, मेरे ख़्याल में हर किताब के बाद हम जटिलता से सरलता की यात्रा करते हैं। भाषा सहज है, सबके मन तक आसानी से पहुँच जाती है, काव्य संग्रह का नाम बहुत सुंदर और सार्थक है, कवरपेज बहुत आकर्षक है, प्रकाशक भी बधाई के हक़दार हैं।

अभी बहुत काम करना बाक़ी है, लिखना बाक़ी है, हमें इनकी और पुस्तकों का इंतज़ार रहेगा। मेरी तरफ़ से **उद्गार** के लिए ढेर बधाई और शुभकामनाएँ। मुझे उम्मीद है यह पुस्तक आम पाठक के दिल पर भी ज़रूर दस्तक देगी, हम सबको इस पुस्तक का स्वागत करना चाहिए।

मनभावन सावन

उमड़ घुमड़ कर आई घटाएं
छम छम छम पानी बरसाएँ
बूँद-बूँद मोती बन जाये
सूखी धरती रस भर जाये
ऋतु सावन आई मनभावन
रिमझिम तान सुनाए सावन
पपीहा पीहु गान सुनाए
मन मयूर तो नाचे जाये।
बादल बरस-बरस दिन रात
धरती पर अपनी प्रीत लुटाये
प्रीत की गागर छलकी जाए
प्रीत की गागर छलकी जाए
भीगी धरती, भीगा अम्बर
भीगे उपवन, नदियाँ, सागर
भीगा रास्ता, भीगी मंजिल
भीगे तुम और हम और हर दिल
भीगा गाँव, भीगी नगरी
भीगा मंदिर, भीगी मस्जिद
भीगे पेड़, पशु, नर, नारी
हर्षी देख वसुन्धरा सारी!

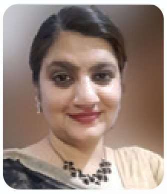

हरप्रीत कौर बवेजा
प्रोफ़ेसर व कवयित्री
चंडीगढ़

मेघा ओ मेघा

(चौपाई छंद)

कैसे यह बादल अब छाये
लगातार बस भय बरसाये

पहले जब बरखा थी आती
खेतों में रौनक छा जाती

मनभावन आकर्षक पल थे
बारिश के वो दिन जो कल थे

पीहर से संदेसा आता
सौगातें भाई ले आता

यादों में वही दिन सुनहले
बह गये पत्र सभी रुपहले

घना घोर अब आफ़त बरसे
रुदन सुनाई दे हर घर से
कोलाहल हर ओर मचा है

प्रकृति ने क्या स्वांग रचा है
माफ करो ओ काले मेघा

फिर मोहक तू बन जा मेघा
सुन रे मेघा पुकार सबकी
दे धरा को प्रेम से थपकी

मेघा रे मेघा, जा न वहाँ
प्यास से मर रहे लोग जहाँ

परमिंदर सोनी
लेखिका व
कवयित्री
चंडीगढ़

शहर बारिश में दरया हो गया

पलटकर देख क्या क्या हो गया है
शहर बारिश में दरया हो गया है

जो झूठा शख़्स सच्चा हो गया है
जहां में और रुसवा हो गया है

तू बैठा है नज़र रस्ते पे डाले
उधर उल्फ़त का सौदा हो गया है

वो जंगल से तो घर को लौट आया
यहाँ पर और तनहा हो गया है

अमन की बात ये किसने उठायी
ये कितना शोर पैदा हो गया है

मेरे हमदम तेरी महफ़िल में आकर
ये दिल मासूम बच्चा हो गया है

अँधेरे घिर गए दिल की गली में
जो तेरे रुख पे पर्दा हो गया है

तुम्हारी याद की पुरवाइयों से
मेरा हर ज़ख़्म ताज़ा हो गया है

इधर ढूंढती है, उधर ढूंढती है
तुम्हें हर घड़ी ये नज़र ढूंढती है

कहाँ तक डरोगे, कहाँ तक बचोगे
ये दुनिया है दुनिया खबर ढूंढती है

मेरे क़द में मेरा नहीं हाथ कुछ भी
दुआ आज अपना असर ढूंढती है

सुबह जब उड़ी थी यहीं था ठिकाना
हुई शाम चिड़िया शज़र ढूंढती है

ये लड़की भी क्या शय बनायीं है या रब
जनम से मरण तक ये घर ढूंढती है

कहन पर मेरा ज़ोर रहता है "अंजुम'
तुम्हारी ग़ज़ल बस बहर ढूंढती है

अशोक 'अंजुम'
ग़ज़लकार
अलीगढ़
उत्तर प्रदेश

जीवन पानी-पानी

पानी पानी पानी पानी
हम सबका है जीवन पानी।

कितना शीतल कितना मधुरम
दिखता नीला औ' असमानी।

भीतर पानी बाहर पानी
ये दुनिया है पानी-पानी।

अक्षर-अक्षर पानी-पानी
लिखने की अब हमने ठानी।

अनमोल बहुत है यह पानी
बात यही सबको समझानी।

कद्र करो पानी की हम-तुम
कहती मेरी दादी-नानी।

नीर बचे संसार बचे हैं
वरना जग की खत्म कहानी।

देखो आई चिड़िया रानी
छत पर रख दो दाना-पानी।

नलिन खोइवाल
कवि, इंदौर

या मेरे ग़म की तू दवा दे दे

या मेरे ग़म की तू दवा दे दे
या कोई मुझसे ग़मज़दा दे दे

आग सच की दबी है हर दिल में
कोई इस आग को हवा दे दे

या ज़माने से बेख़बर कर दे
या ज़माना ही तू नया दे दे

या मेरे फ़न को बख्श दे अज़मत
या तो या रब ! इसे फ़ना दे दे

बढ़ गयी है बहुत ही दिल की उमस
झूमके बरसे जो घटा दे दे

मेरे फ़िक्रो ख़याल को या रब!
तू ग़ज़ल की हसीं क़बा दे दे

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'
ग़ज़लकार
वाराणसी

कोई उलझन न कोई मसला

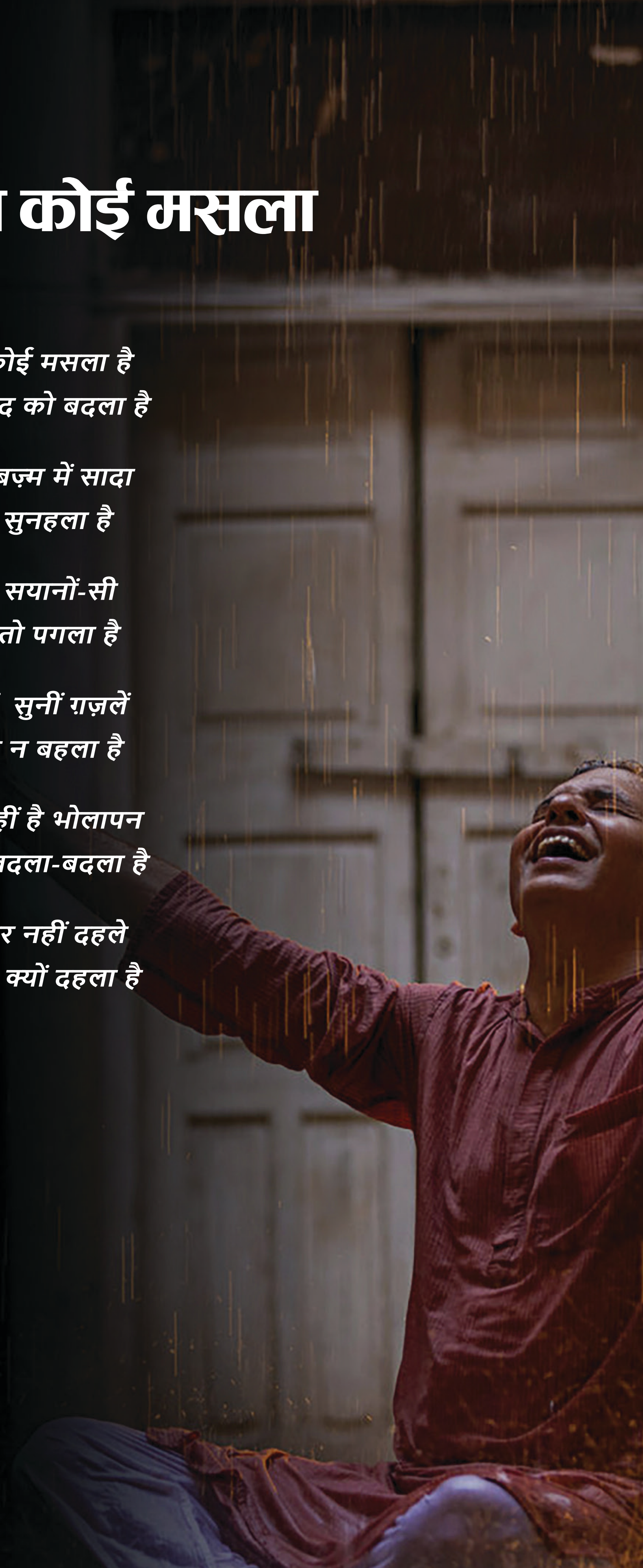

कोई उलझन न कोई मसला है
जब से थोड़ा सा ख़ुद को बदला है

कोई मुझ- सा न बज़्म में सादा
है रुपहला कोई सुनहला है

बात करता हूँ मैं सयानों-सी
लोग कहते हैं ये तो पगला है

कुछ किताबें पढ़ीं सुनीं ग़ज़लें
दिल हमारा मगर न बहला है

उसके रूख़ पर नहीं है भोलापन
उसका लहजा भी बदला-बदला है

लोग जिस बात पर नहीं दहले
उसपे मेरा ही दिल क्यों दहला है

डॉ मृदुल शर्मा
साहित्यकार
लखनऊ

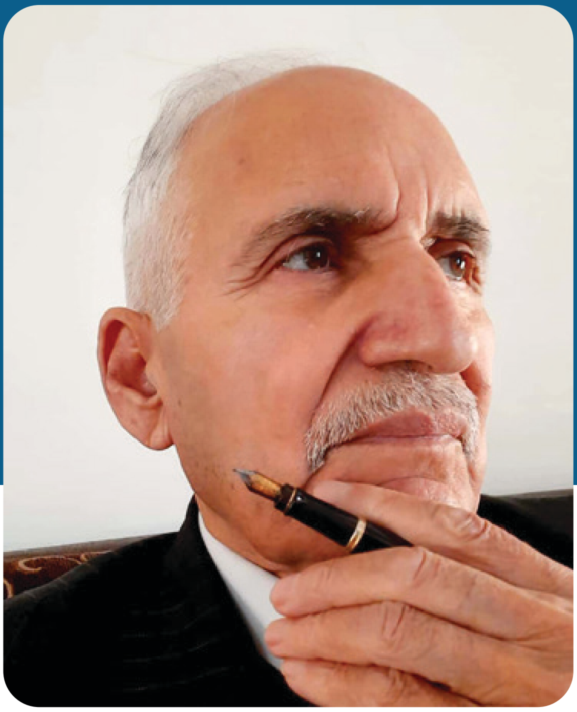

मेरी कविताएं लोक-राग, लोक-आग, लोक-वेदना और लोक-मंगल की कविताएं

साक्षात्कारकर्ता.... सीमा गुप्ता

क्या आप किसी ऐसे कवि से मिले हैं जो इतने सरल व्यक्तित्व के धनी हैं, आवाज़ में इतनी मधुरता, विनम्रता है कि वो आपके साथ बैठे हैं, बेहद सादगी पसंद और उतने ही प्रेम और सहजता से बात करते हैं कि आप जान ही नहीं पाते कि जिस कवि से आप मिल रहे हैं, जिनसे आप बात कर रहे हैं वो हिंदी साहित्य के नामवर वरिष्ठ कवि, जनकवि कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, ग़ज़लकार आलोचक, संयोजक, संपादक जिनकी **तीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 12 कविता संग्रह, 7 आलोचनात्मक ग्रंथ, 11 संपादित पुस्तकें शामिल हैं ।**

इनकी कविताओं का अनुवाद **अंग्रेज़ी, मराठी, बंगला भाषा** में भी हुआ है। इनकी कविताएँ विभिन्न शिक्षा बोर्डों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल है।

के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन द्वारा सम्मान, बम्बई में जनकवि के रूप में सम्मान, गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार से व अन्य सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

कुमार कृष्ण की कविताओं में लोक रंग है, सादगी, गंभीरता नैसर्गिक सुंदरता के साथ आशा और विश्वास भी है।

तो आइये आज मिलते हैं इस साक्षात्कार के माध्यम से **आग और राग** के कवि **कुमार कृष्ण** जी से जो बात करते हैं मिट्टी की ख़ुशबू आती है, मुस्कुराते हैं तो नदियाँ मुस्काती लगती हैं.......

सबसे पहले तो मेरे ज़ेहन में यह सवाल आया कि आपको आग और राग का कवि क्यों कहा जाता है?

बहुत समय पहले मैंने अपने एक साक्षात्कार में कहा था कि मुझे केदार के राग, मुक्तिबोध की आग तथा कबीर और धूमिल की जाग ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। मुझे लगता है आलोचकों ने मेरी कविता का विश्लेषण करते समय वहीं से इन शब्दों को उठा लिया है, या फिर हो सकता है मेरे प्रकृति और जीवन के प्रति राग तथा व्यवस्था के प्रति आक्रोश से ये शब्द आए हों।

जिस वक्त में आपका जन्म हुआ और आपने जब होश सम्भाला वो वक्त आज़ाद भारत का वक्त था, आप पर उस वक्त का क्या प्रभाव पड़ा?

मेरा जन्म सन् १९५१ का है अर्थात् स्वतन्त्र भारत के चार साल बाद। स्कूल के दिनों में हम बस केवल इतना जानते रहे कि १५ अगस्त को तिरंगा फहराते समय ताली बजाने का अर्थ ही आज़ादी है। आगे चल कर विश्वविद्यालय में पढ़ते समय मैंने आजादी के सही मायने को जाना जिसे मैं अपने प्रिय कवि के शब्दों को उधार लेकर आपको बताना चाहूंगा। वह लिखते हैं आज़ादी तीन थके हुए रंगों का नाम है जिन्हें एक पहिया ढोता है। यही नहीं तब मुझे इस बात का भी अहसास हुआ कि मेरा देश हिमालय से लेकर हिन्दमहासागर तक फैला हुआ जली हुई मिट्टी का ढेर है। जहां हर तीसरी जुबान का मतलब नफ़रत है, साजिश है, अन्धेर है। यह मेरा देश है और मेरे देश की जनता है। जनता क्या है, एक भेड़ है जो दूसरों की ठण्ढ के लिए अपनी पीठ पर ऊन की फसल ढो रही है।

बंटवारे का आपके मन पर कितना असर हुआ?

देश के बंटवारे को मैंने न देखा है न उसकी पीड़ा को झेला है। बस उसे उतना ही जानता हूं जितना भीष्म साहनी ने 'तमस' में दिखाया है।

मुक्तिबोध, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, केदारनाथ, अज्ञेय जैसे वरिष्ठ कवियों के दौर में कविता और आज के दौर की कविता में जो अन्तर आया उसे आप कैसे देखते हैं?

आपके प्रश्न में मुख्यतः दो कवियों के नाम आए हैं। एक अज्ञेय दूसरा मुक्तिबोध।

जिसे हम साठोत्तरी कविता कहते हैं, उस कविता-धारा के मूल में निराला और मुक्तिबोध हैं। एक धारा मुक्तिबोध के माध्यम से नागार्जुन, मंगलेश, राजेश जोशी, उदय प्रकाश, अरुण कमल जैसे कवियों के द्वारा आगे बढ़ी और दूसरी ओर मुक्तिबोध के ही माध्यम से त्रिलोचन, धूमिल, जगूड़ी, केदारनाथ सिंह, मानबहादुर सिंह जैसे कवियों के द्वारा विकसित हुई। दोनों धाराओं के कवियों में कोई वैचारिक वैषम्य या विरोधाभास नहीं है। हाँ अज्ञेय-स्कूल के कवियों का विकास उस रूप में नहीं हुआ जिस रूप में होना चाहिए था। दोनों धाराओं के कवियों की कविताएं अपने देश की मिट्टी, अपने समय और समाज की वास्तविकताओं से उपजी कविताएं हैं। दोनों धाराओं के कवियों की कविताएं हमें अधिक जागरूक, सचेत, प्रतिबद्ध और संवेदनशील बनाती हैं। अन्तर केवल इतना है कि एक धारा के कवियों में दूसरी की अपेक्षा ग्रामीण रागात्मक बोध अधिक देखने को मिलता है। मेरा मानना है कि आज की कविता की जड़ें भी इन दोनों धाराओं में ही मौजूद हैं। हाँ, इधर अज्ञेय-स्कूल के कवियों का अधिक नोटिस नहीं लिया जाता।

आपने कविताएं तकरीबन 70-72 के आस-पास लिखनी शुरू की। उस वक़्त क्या आपको महसूस हुआ कि पहले आर्थिक तौर पर सैटल होना कवि होने से ज़्यादा ज़रूरी है?

मैं जिन दिनों एम.ए. का विद्यार्थी था उन दिनों मेरा सम्पर्क प्रोफ़ेसर बच्चन सिंह जी से हुआ। एम.ए. अंतिम वर्ष में वह मेरे अध्यापक भी रहे। तब वह नये-नये काशी से शिमला आए थे। उस समय मेरी कविताएं देश की पत्रिकाओं में प्रकाशित होनी प्रारम्भ हो गई थी। उनके सम्पर्क में आ कर सही अर्थों में मेरे कवि का परिष्कार हुआ। एम.ए. में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पर रहने के परिणामस्वरूप मुझे विश्वविद्यालय की ओर से फैलोशिप मिल गई। एम.फ़िल. के दौरान मेरा सम्पर्क भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, विष्णु खरे, रामदरश मिश्र, सुरेन्द्रप्रताप सिंह और कुमार विकल से हुआ। न केवल सम्पर्क हुआ अपितु मैंने इन कवियों के साथ अनेक बार कविता-पाठ भी किया। एम.फिल. के बाद मेरा पी-एच॰डी॰ में पंजीकरण हो गया। इस समय भी मुझे फैलोशिप मिलती रही। इस दौरान मेरा सम्पर्क अरुण कमल, राजेश जोशी, नरेन्द्र जैन, भगवत रावत, प्रयाग शुक्ल, अशोक वाजपेयी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, त्रिलोचन, मंगलेश डबराल, मानबहादुर सिंह जैसे कवियों से हुआ। पी-एच॰डी॰ करते समय ही मेरी विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्ति हो गई। इस तरह से कविता ने ही मुझे पहचान दी।

आपकी कविताएं आपके आसपास के परिवेश के दुःखों, अभावों के प्रति संवेदनाओं

की सघन अनुभूतियों से उपजी हैं, पहाड़ों का दर्द, जल, जंगल, ज़मीन सब बिक रहा है, ये छटपटाहट, कसमसाहट आपने कवि के तौर पर महसूस की या मनुष्य के तौर पर?

यह बात सही है कि मैंने 70 के आस-पास कविता लिखना प्रारम्भ किया किन्तु 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक जिस आपातकाल को देश ने झेला उस समय मेरे कवि में एक बदलाव आया। उस समय जो कविताएं लिखी गई वे मेरी पहली कविता की किताब 'डरी हुई ज़मीन' के माध्यम से सामने आईं। वैसे वे कविताएं एक निर्मित होते कवि की कविताएं हैं। फिर भी अपनी मिट्टी के प्रति राग और व्यवस्था के प्रति आक्रोश अथवा आग को यहां देखा जा सकता है। संरचनागत जटिलता जो उन कविताओं में था वह मेरी बाद की कविताओं में देखने को नहीं मिलेगा। सीमा जी मेरी तमाम कविताएं गांव के लोगों के जीवन-संघर्ष और जिजीविषा के द्वन्द्व की कविताएं हैं। यही द्वन्द्व मुझे परेशान करता है, बेचैन करता है, झकझोरता है, उद्वेलित करता है और मेरे सामने बेशुमार सवाल खड़े करता है। अपनी कविताओं में मैं इन्हीं सवालों के उत्तर ढूंढने की कोशिश करता हूं। मैं अपने आस-पास के मनुष्य को लिखने का प्रयास करता हूं। वही मनुष्य जो अमनुष्य होता जा रहा है। सच कहूं तो आज का समय मनुष्यता पर होने वाले प्रहार का समय है। यह ऐसा समय है जहां बच्चों की शरारतें मर चुकी हैं। उनके सपने किसी ही मैन ने छीन लिए हैं। बहुत बार मैं सोचता हूं कि हमारे शिशुओं के शैशव की शरारतों का मरना क्या भविष्य के मनुष्य का मरना नहीं है। एक समय था जब मनुष्य की जरूरतों के अनुसार बाज़ार बनते थे। आज बाजार की आवश्यकता के अनुसार मनुष्य को ढाला जा रहा है। फिर इस बाज़ारवाद की फांउड्री में क्या मनुष्य नाम का जीव बच पाएगा? मैं इन्हीं बातों से, इन्हीं प्रश्नों से फिर-फिर परेशान होता हूं और इन अन्तर्विरोधों के बीच अपने समय के सच को लिखने का प्रयास करता हूं।

आपके हृदय के करीब कौनसी कविता है?

किसी एक कविता का उल्लेख कर पाना मुश्किल है।

आपकी निरन्तर साधना का राज क्या है, क्या चीज है जो आपको रुकने नहीं देती?

सीमा जी, मेरी कविता का अंकुर लोक में फूटा। वह लोक में विकसित हुआ और वह आज भी उसी लोक में जी रहा है। जन्म से लेकर आज तक मेरा लोक-जीवन और प्रकृति के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। इसीलिए मेरी तमाम कविताएं लोक-राग, लोक-आग, लोक-वेदना और लोक-मंगल की कविताएं हैं। जिस दिन लोक और प्रकृति से रिश्ता टूट जाएगा उस दिन कविता भी रुक जाएगी लेकिन मैं ऐसा होने नहीं दूंगा।

आलोचना की तरफ मुड़ने का निर्णय चेतना का निर्णय था या कोई और कारण ?

सीमा जी जब-जब रचनाकार आत्मसाक्षात्कार करता है तब-तब उसके भीतर आलोचना की कोंपलें फूटती हैं। यही वजह है कि 'ग्यारह वर्ष का समय' का कहानीकार रामचन्द्र शुक्ल 'चिन्तामणि' की रचना कर सका। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ही कबीर को हिन्दी-साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाई। फिर चाहे 'तार सप्तक' से अपनी रचना-यात्रा प्रारम्भ करने वाले रामविलास शर्मा हों या 'नयी कविता' के कवि नामवर सिंह, सभी मूलत: रचनाकार रहे हैं। मुक्तिबोध ने कविता के साथ-साथ जो आलोचनात्मक कार्य किया क्या वह कविता से कम है। उसने तो आलोचना के तेवर को ही बदल डाला।

आप अपने आप को आलोचक कहलवाना पसन्द करेंगे या कवि ?

मैं मूलत: कवि हूं।

आज के स्त्री-लेखन पर आप क्या कहते हैं ?

मुझे लगता है पुरुष-लेखन और स्त्री-लेखन के खाँचों में बांट कर साहित्य को नहीं देखना चाहिए। स्त्री-विमर्श को ले कर समय-समय पर ढोल पीटते रहे हैं और आज भी पीट रहे हैं। दलित-विमर्श और स्त्री-विमर्श को ले कर जरा एक बार महादेवी वर्मा के संस्मरण और रेखाचित्र तो पढ़ कर देखें। चाहे कथा-साहित्य हो अथवा कविता-लेखन अपने देश में स्त्री अत्यन्त विलक्षण कार्य कर रही है। मैं बहुत बार कहता हूं कि जिस दिन तमाम कवि स्त्री-कविता से उसका लावण्य, सौन्दर्य और तरलता चुरा लेंगे तथा जिस दिन तमाम कवयित्रियाँ मुक्तिबोध की लोह भाषा से कविता का घर बनाने लगेंगी उस दिन भारतीय कविता का कोई सानी नहीं होगा।

कुमार कृष्ण जी की कविता '**नई दुनिया की तलाश**' की कुछ पंक्तियाँ...

पृथ्वी के निर्माण का बीज हैं औरतें
धरती के विध्वंस का बारूद हैं औरतें
सोचता हूँ-
आख़िर क्यों रोती हैं गहनों से लदी औरतें
पुआल की कथरी में दुबकी औरतें

कुमार कृष्ण अपनी कविताओं में स्त्री के दुख, सुख, चाहतों, एहसासों को बड़ी सूक्ष्मता से पिरोते हैं और स्त्री की सौम्य, सरल तस्वीर बनाते हैं। शायद स्त्री स्वयं भी स्वयं को इतने अच्छे से तरीक़े से ना जान पाए। इन सब बातों में सबसे खूबसूरत बात यह है कि जो साक्षात्कार आप सब पढ़ रहे हैं वो कुमार कृष्ण सर ने हस्तलिखित हमें भेजा है, सर की लिखावट अद्‌भुत, कलात्मक सौंदर्य लिए है। कुमार कृष्ण सर के ही शब्दों से सुंदर लिखावट के बारे में कहती हुई अपनी बात को विराम देते हुए सर का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने साक्षात्कार के लिए समय निकाला, पंक्तियाँ यूँ हैं कि

उसी ने सिखाए थे मुझे वर्णमाला के अक्षर
हर रात को सुनाती थी छोटी अम्मा राजा रानी की अधूरी कहानी

अधूरा इश्क

किसी को भी किसी से तब अधूरा इश्क होता है
हों गर्दिश में सितारे जब अधूरा इश्क होता है
उदासी बेकरारी बेबसी से दोस्ती होगी
सुना हमने भी है जब जब अधूरा इश्क होता है
वो हरदम दिल में रहते हैं मगर वो मिल नहीं सकते
तो इसका ये हुआ मतलब अधूरा इश्क होता है
हमें पूछो अधूरापन किसे कहते हैं चाहत में
हमें मालूम है कब-कब अधूरा इश्क होता है
तेरी चाहत तेरी कोशिश तेरी फरियाद बेमतलब
अगर राज़ी नहीं हो रब अधूरा
इश्क होता है
हमें 'शहनाज़' इतना ही समझ आया मुहब्बत में
अगर हों मुख्तलिफ मज़हब
अधूरा इश्क होता है

शहनाज़
शायरा, पंचकूला

'हंसता काइको है, मैं कर लेगा'

अदम्य साहस और संघर्षों की कहानी

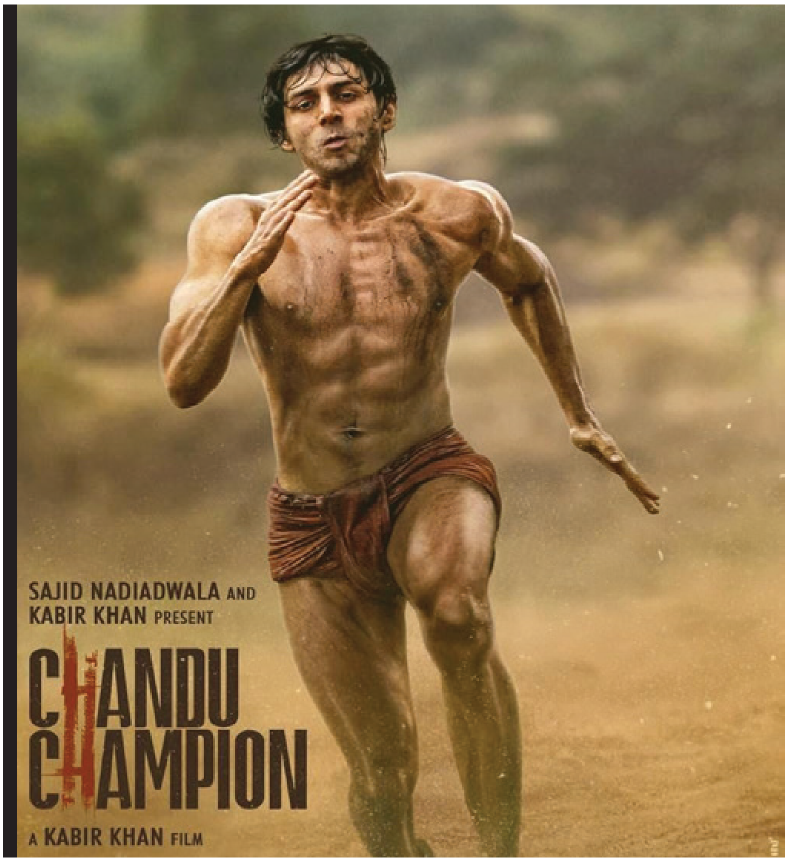

"चंदू चैंपियन", कार्तिक आर्यन द्वारा अभिनीत, एक मनोरंजक फ़िल्म है जो दर्शकों को हास्य और प्रेरणा का मिश्रण प्रस्तुत करती है। इस फ़िल्म में कार्तिक ने चंदू नामक एक साधारण, लेकिन महत्वाकांक्षी युवा की भूमिका निभाई है, जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए कठिनाइयों का सामना करता है।

"चंदू चैंपियन" फिल्म के मुख्य किरदार चंदू की जीवनी की आत्मकथा है । एक पैरा ओलंपिक (विकलांग) स्विमिंग गोल्ड मेडलिस्ट हैं, जो अपने अदम्य साहस और संघर्षों के बावजूद खेल की दुनिया में अपना नाम बनाते हैं। फिल्म में चंदू का जीवन कई कठिनाइयों और चुनौतियों से भरा हुआ दिखाया गया है, लेकिन उनकी दृढ़ता और मेहनत उन्हें हर मुश्किल से लड़ने की शक्ति देती है।

कुछ डायलॉग जो चंदू के साहस को इंगित करते हैं

'मैं चंदू नहीं, चैंपियन हूं' ख़ास डायलॉग! फिल्म में चंदू का एक डायलॉग है, 'हंसता काइको है, मैं कर लेगा।' और वाकई जब वह इस नामुमकिन काम को कर दिखाता है, तब यही खयाल आपके जेहन में पक्का होता है कि दुनिया भले आपको चंदू, चोमू या पप्पू कहकर मजाक उड़ाए, मगर लगातार कोशिश करने पर आप सबकी बोलती बंद कर सकते हैं।

'तुझे गांव से नहीं भगाया गया, तेरे सपने की ओर दौड़ाया है! उसको ट्रेन में भागने पर सरदार साथी ने कहा! चंदू ओरिजिनल नाम "मुरलीकांत पेटकर" की कहानी आजाद हिंदुस्तान की कहानी है. हालात ऐसे थे कि देश टिक भी पाएगा या नहीं? पर हिंदुस्तान लड़ता है हर हालात से यहिनीस्का प्रेम का स्रोत है !

फिल्म के माध्यम से चंदू की कहानी में यह दिखाया गया कि चंदू ने अपने देश के लिए ओलंपिक में बड़ी उपलब्धि हासिल की थी, लेकिन इसके बावजूद उन्हें अर्जुन पुरस्कार जैसे खेल सम्मान से वंचित रखा गया। इसके बजाय, उन्हें बाद में कुछ एनजीओ / समाजसेवी संस्थाओं के प्रयास द्वारा पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।

इस प्रकार की कहानी उन खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा हो सकती है, जो कठिनाइयों के बावजूद अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं और अंत में उन्हें उनका सम्मान मिलता है, भले ही देरी से हो।

निशांत कुमार श्रीवास्तव
लेखक व इंजीनियर
चंडीगढ़

यह कहानी समाज और खेल संगठनों के द्वारा अक्सर अनदेखी किए गए खिलाड़ियों की स्थिति पर भी सवाल उठाती है, जिनकी कड़ी मेहनत और योगदान के बावजूद उन्हें समय पर उचित पहचान या पुरस्कार नहीं मिलते। पद्मश्री एक बहुत प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान है, लेकिन चंदू को अर्जुन पुरस्कार उम्मीद थी, जो विशेष रूप से खेल के क्षेत्र में दिया जाता है पर समाज उन्हें अरसे तक भूल गया और सोशल मीडिया तथा जर्नलिस्ट्स के अथक प्रयासों द्वारा उन्हें अर्जुन पुरस्कार से भी ऊपर "पद्मश्री अवार्ड" मिल सका !

फ़िल्म की कथा में जोश, उत्साह और संघर्ष को बखूबी पेश किया गया है। कार्तिक की अदाकारी ने इस किरदार में जान डाल दी है, जिससे दर्शक चंदू के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। न केवल कार्तिक की अभिनय क्षमता सराहनीय है, बल्कि सहायक कास्ट ने भी अपनी भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभाया है।

इसके अतिरिक्त, फ़िल्म की तकनीकी गुणवत्ता, जैसे कि कैमरा कार्य और संगीतमय तत्व, इसे और भी आकर्षक बनाते हैं। दिशा, संपादन और संवाद लेखन ने इसे एक सुनियोजित और मनोरंजक अनुभव प्रदान किया है।

संक्षेप में, "चंदू चैंपियन" एक प्रेरणादायक कहानी है जो इस बात को उजागर करती है कि कठिनाइयाँ अप्रत्याशित हो सकती हैं, परंतु सच्ची मेहनत और लगन से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। कार्तिक आर्यन ने एक बार फिर से अपनी अभिनय क्षमता का लोहा मनवाया है, और यह फ़िल्म दर्शकों के लिए एक सुखद अनुभव साबित होती है। चंदू चैंपियन के अंत में, मुरलीकांत पेटकर ने एक नया विश्व रिकॉर्ड स्थापित करके और पैरालिंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर एक शानदार जीत हासिल की। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों को 2018 में और मान्यता मिली जब भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

आँगन का सौदा

"माँ, अब चलो भी ! सारा सामान पैक करना है बहुत सारे काम है। रद्दी वाले को भी बुला रखा है, वह पुराना पड़ा सामान ले जाएगा।" आलिंद ने जोर से पुकारा ।

"मैं भी तो यह घर, यह गलियाँ छोड़कर पढ़ाई करने गया था। मैं तो नहीं रोया।"

"कल से आँसू बहाए जा रही हो, इतनी सुंदर सोसाइटी में नया घर लिया है कब तक अकेले यहाँ पर ही रहोगी।"

मैं आलिंद के फैसले से बहुत परेशान थी। उसने यह घर बेच दिया था और किसी नई सोसाइटी में फ्लैट ले लिया था।

"बेटा, तुम नहीं समझोगे! मैं ब्याह कर आकर इसी घर में आई थी। इस घर में तेरे पिताजी के साथ मैंने जीवन की अनमोल वर्ष गुजारे हैं। उनकी यादें बसी हैं यहाँ। इन गलियों को छोड़ कर जाना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। मुझे तो यहाँ की मिट्टी और परिंदों से भी प्यार है" मैंने रुँधे स्वर में बोला।

"माँ, समझने की कोशिश किया करो, विनी और वरुण भी बड़े हो रहे हैं। उनकी पढ़ाई और विनी की शादी के लिए पैसे की जरूरत है। हम दोनों मिलकर भी इतना नहीं कमा पाते की बच्चों की महँगी पढ़ाई का खर्च उठा सके। आपको तो पता ही है मैं कितनी मेहनत करता हूँ। "

आलिंद अपने आपको बचाते हुए बच्चों का हवाला दिए जा रहा था।

मैं अपना पल्ला मुँह में दबाए किसी तरह से अपनी रूलाई को रोकने का प्रयास कर रही थी। मैंने भी तो अपने बच्चों, आलिंद और अम्बा को उच्च शिक्षा दी, पर आँगन का सौदा नहीं किया?

"कुछ ही पल बचे हैं, जी भर देख लूँ, फिर न यह आँगन रहेगा, न यह आम का पेड़, न यह गौरेया, न कू कू करती कोयल ? रह जाएँगी तो केवल यादें!!"

यह आम का पेड़, कल कट जाएगा! कितनी सुबह, कितने शामें इसी आम के नीचे बैठकर गुज़ारी हैं। साक्षी है यह पेड़, मेरे हर सुख-दुख का! कभी भी आलिंद के पिताजी नीलेश के साथ झगड़ा होता था तो इसी पेड़ पर पड़े झूले पर बैठकर अपने मन को शांत करती। अब आलिंद के पिताजी तो रहे नहीं, तो अपने मन की किससे कहूँ ?

आलिंद ने तो अपनी नौकरी और बच्चों की पढ़ाई का वास्ता दे, इस आँगन का सौदा कर दिया। इसमें अब चार मंजिला इमारत बनेगी। इतना दुख तो शायद मुझे माँ का आँगन, और गलियाँ छोड़ते हुए भी नहीं हुआ था, क्योंकि तब साथ में, एक नई जिंदगी के सुनहरे सपने भी थे।

अब यह आँगन और गलियाँ पराई हो जाएंगी। आम का पेड़ भी कट जाएगा और यहाँ पर बहुमंजिला इमारत बनेगी। आजकल के बच्चे क्या जाने आँगन और पेड़ के नीचे बैठने का सुख!!

रेखा मित्तल
लेखिका
चंडीगढ़

काला़ महीना

रेनू आज बहुत खुश थी और होती भी क्यूँ न आखिरकार शादी के बाद जब से विदाई हुई तब से ले कर आज तक वो मायके नहीं जा पाई थी कभी सास बीमार तो कभी पति के काम, कभी दिन ठीक नहीं होता था, आज तो सास ने भी बोल दिया था की परसों से काला़ महीना शुरू हो रहा है तो अपने बैग पैक कर लो, बैड से उठकर हाथ मुह धो कर वो सीधे गौशाला गई, गाय भैंस को दुह कर साफ़ सफ़ाई की, न जाने आज उसके हाथो में इतना जोर कहाँ से आ गया था कि हर काम वो कुछ ही समय में कर रही थी।

गौशाला के काम ख़तम कर के जब वो घर आने लगी तो जोर के बादल गरजने लगे बिजली चमकने लगी झमाझम बारिश शुरू हो गई, बेचारी रेनू भीगती हुई घर आई तो बरामदे में झाड़ू लगाते हुए सास बोली मुइये छत्रु ले जाती अब लगी भीगना चल जल्दी से उप्पर आग जला राखी है मैंने सेक ले फिर रोटी बनाकर बैग पैक कर ले तुझे काला़ महीना काटने भी तो जाना है आज।

सासू की बाते सुनते हुए नेहा उप्पर चली गई रसोई के सारे काम निपटा कर वो वापिस आ गई अपने कमरे में, कमरे में आते ही दुप्पटा सर से हटा कर बैड पर फेंक दिया और झपटी अलमारी के उप्पर रखे बैग और अटेची की तरफ, बैग में तो उसने पहले ही छोटे भाई बहन के लिए कपड़े रख लिए थे क्यूंकि की शादी के बाद वो पहली बार घर जा रही थी तो इतना करना तो बनता था उनके लिए, मगर वो अपने लिए क्या ले जाए साथ इस बात पर थोडा अस्मजस था उसे।

पहली बार पीहर गई बेटी को सब देखते है की क्या पहनकर आई है और मां ने तो खास हिदायत दी की साथ में सिर्फ़ महंगे कपडे और साड़ियाँ ही लाना ताकि सरीकी में पता चले की उसने अपनी बेटी की शादी रईसों के घर में की है, पर हाँ जब सासु मां पूछेगी की इस बैग में क्या तो वो बोल देगी की इसमे किताबे हैं जो उसने अपने बहन और भाई के लिए ली हैं, उसकी ये उधेड़बुन तब ख़तम हुई जब बादल जोर से कड़के, अरे मैं कहाँ खो गई जल्दी जल्दी अटेची में सामान ड़ाल देती हूँ सबसे पहले उसने अपनी बरी के सूट डाले फिर बनारस की साडी उर महंगे सूट, क्या पता माँ पापा इस बार जन्माष्टमी का उद्यापन ही कर दे तो वो सूट में अच्छी नहीं लगेगी इसलिए सारा सामान अच्छी तरह जांच परख कर उसने अटैची भर ली और खुद के पहनने के लिए फिरोजी रंग का अफगानी सूट निकाल लिया जिसे नीरज लाये थे पर कभी टाइम नहीं लगा इसे डालने का, तो आज वो इसे पहली बार पहन रही

पहली बार पीहर गई बेटी को सब देखते है की क्या पहनकर आई है और मां ने तो खास हिदायत दी की साथ में सिर्फ़ महंगे कपडे और साड़ियाँ ही लाना ताकि सरीकी में पता चले की उसने अपनी बेटी की शादी रईसों के घर में की है

अब तुम तो मेहमान हो इस घर की कितने दिन रहोगी तो क्यूँ उसका सामान बाहर निकालना, तुम अपना सामान बैठक में रख दो आराम करो, और हाँ रात को क्या बनाऊ तुम्हारे लिए अब जमाई बेटी रोज़-रोज़ थोड़ी आयेंगे मेहमान बनकर

थी। सारा सामान बरामदे में रख तो उसने लिया पर आज पतिदेव ना जाने कहाँ रह गए, उप्पर से ये बारिश अगर अभी न रुकी तो क्या पता सासू जी बोल दे की दोपहरी बनाकर जाए, फिर तो वो शाम तक नहीं जा सकेगी, और कहीं जोर की बारिश से सड़क ही बंद हो गई तो वो कैसे जा पायेगी अपने घर।

तभी सासू मां बोली अरी क्या सोच रही हो देख कब से नीरज आकर खड़ा है जल्दी से सामान रख गाड़ी में, इतना बोला था की नीरज और नेहा से सामान रख दिया कार में पर हैंडबैग और दो लिफ्फाफे नेहा ने अपने गोदी में ही रख लिए, सब के पैर छू कर विदाई ले कर वो बैठ गई वो कार में मगर उसका मन तो पहले ही मायके में पहुच गया था कि कैसे वो मां के गले लगती बार रो देगी मगर हाँ पापा के गले लगती बार नहीं रोएगी, फिर वो जाएगी अपने कमरे में और अपने बैड पर बैठ कर पीयेगी चाय मम्मी पापा देखते रहे अपने जमाई को मैं अपनी मर्जी से रहूंगी, तभी नीरज बोला मैडम क्या लूँ मिठाई में काजू कतली या वर्फ्फी अरे आप वर्फी ले लो ज्यादा टाइम मत लगाना कहीं उप्पर रोड बंद हुआ तो फिर हम फस जायेगे देखते नहीं कितनी बारिश हो रही है, नीरज ने मिठाई ले ली और दोनों चल पड़े अपने घर की तरफ.

अपने मन के साथ खेलती हुई नेहा और नीरज घर पहुच गई मम्मी पापा के पास, बेटी दामाद की खूब खातिरदारी की चाय पानी लजीज मिठाई कितना कुछ रखा था मां ने टेबल पर मगर नेहा मन इन सब में कहाँ लग रहा था उसे तो बस अपने कमरे में जा कर अपने बैड पर चाय पीनी थी, अच्छा नीरज आप पापा के साथ बाते करिए मैं सामान को रख देती हूँ अपने कमरे में जा कर बैग अटेची रखे तो उसके सामने पूरी सब यादे ताज़ा ही गई आज वो एक बार अपने घर आकर खुश थी पर हाँ आज माँ का स्वभाव तोडा अटपटा सा लग रहा था शायद ये उसका भ्रम हो। चाय खत्म कर के उसने अटेची से कपडे निकाले तभी मां भी कमरे में आ गई "अरे मां अच्छा किया आपने आकर चलो मुझे मेरे कपडे देती रही जिनको में अलमारी में रख देती हूँ और हाँ बैग का सामान मैं बाद में देती हूँ" अरी बेटी तुम रहने दो सामान को अटेची में ही मैं इसे अलमारी के उप्पर रख दूंगी वो क्या हैं न तुम्हारी शादी के बाद छोटी की किताबें और सामान इस में रखा है अब तुम तो मेहमान हो इस घर की कितने दिन रहोगी तो क्यूँ उसका सामान बाहर निकालना, तुम अपना सामान बैठक में रख दो आराम करो, और हाँ रात को क्या बनाऊ तुम्हारे लिए अब जमाई बेटी रोज़-रोज़ थोड़ी आयेंगे मेहमान बनकर" ऐसे बोलते हुए मां बाहर चली गई और खिड़की से बादलों को चीरती हुई सूरज की किरणें नेहा के मुंह पर एसे पड़ रही थी कि मानो उसे चिड़ाते हुए कह रही हो स्वागत है आपका मायके में।

प्रमोद कुमार हर्ष
सरकाघाट मंडी
हिमाचल प्रदेश

रिम-झिम का मौसम

(मानसून)

मानसून शब्द अरबी मौसिम (जिसका अर्थ है "मौसम") से लिया गया है और इसका मतलब हवाओं का मौसमी उलटफेर है।

मानसून या पावस, मूलतः हिन्द महासागर एवं अरब सागर की ओर से भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आनी वाली हवाओं को कहते हैं जो भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि में भारी वर्षा करातीं हैं। ये ऐसी मौसमी पवन होती हैं, जो दक्षिणी एशिया क्षेत्र में जून से सितंबर तक, प्रायः चार माह सक्रिय रहती है।

मानसून का प्रभाव बहुआयामी होता है और यह समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। इसे सही ढंग से प्रबंधित करने की आवश्यकता होती है ताकि इसके लाभ उठाए जा सकें और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।

मानसून का सांस्कृतिक प्रभाव गहरा और व्यापक है, जो न केवल समाज और परंपराओं को समृद्ध करता है, बल्कि लोगों की जीवनशैली और सोच को भी प्रभावित करता है। यह मौसम जीवन के कई पहलुओं में एक नई ऊर्जा और उत्साह लाता है, जिससे समाज की सांस्कृतिक धरोहर और भी समृद्ध होती है। इस मेघो भरे मौसम का हमारे कवियों और साहित्यकारों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है जिससे कि हमारे साहित्य की समृद्धि हुई है। वर्षा ऋतु से प्रभावित होकर हमारे कवियों ने अनंत श्रेष्ठ रचनाएं रची है जिसमें उन्होंने अपनी भावनाओं को उत्कीर्ण किया है।

मेघदूतम् महाकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात दूतकाव्य है। कालिदास ने अपने जीवन की किसी विरह व्यथा कथा को मेघदूत में मेघो को संदेश वाहक बनाकर निबद्ध किया है। इसमें एक यक्ष की कथा है जिसे कुबेर अलकापुरी से निष्कासित कर देता है। मेघदूत की लोकप्रियता भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही रही है। जहाँ एक ओर प्रसिद्ध टीकाकारों ने इस पर टीकाएँ लिखी हैं, वहीं अनेक संस्कृत कवियों ने इससे प्रेरित होकर अथवा इसको आधार बनाकर कई दूतकाव्य लिखे।

हेमलता पालीवाल 'हेमा' जी द्वारा रचित 'पावस ऋतु आ गई', उत्कृष्ट रचना है इसमें कवयित्री ने वर्षा ऋतु की अनुपम प्रस्तुति की है:

लो, पावस ऋतु आ गई
श्याम नभ पर छाई
वो काली बदरी आ गई
पंख फैलाकर मयुर नाचे
घन-घन बादल गाजें
कोयल की मधुर आवाज आई
लो, पावस ऋतु आ गई
रिम-झिम...रिम-झिम...बरसे
प्रिय मिलन को गौरी तरसे!

हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित "बादल घिर आए" भी इस बात का प्रमाण है:

बादल घिर आए, गीत की बेला आई।
आज गगन की सूनी छाती भावों से भर आई,

चपला के पांवों की आहट आज पवन ने पाई, डोल रहे हैं बोल न जिनके मुख में विधि ने डाले बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

बिजली की अलकों ने अम्बर के कंधों को घेरा,
मन बरबस यह पूछ उठा है कौन, कहां पर मेरा?

इस प्रकार अनेकों अनेक रचनाकारों ने वर्षा ऋतु के बारे में अपनी व्याख्याएं दी है और प्राकृतिक सौंदर्य और अपनी भावनाओं को सामने बिठाते हुए साहित्य की अनुपम कृतियां हमारे सामने रखी हैं।

कुछ और पहलुओं पर अगर हम नजर डालें तो कुल मिलाकर मानसून या रिमझिम के मौसम का हमारे पूरे जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है केवल खान-पान पर बल्कि रीति रिवाज पर जो कि हमारी सनातन पद्धतिका अभिन्न अंग है। हालांकि बारिश के मौसम में कुछ विपत्तियों का सामना भी करना पड़ता है जैसे की बाढ़, भूस्खलन बादल फटना या अन्य प्राकृतिक आपदाएं किंतु साहित्यिक दृष्टिकोण के मध्य नजर हमारे भारतीय संस्कृति पर एक अमित छाप है। हमारे भारतीय समाज में अनेक प्रकार के रीति रिवाज प्रचलित है जिनका मौसम के साथ सीधा संबंध है हमारे व्रत त्यौहार वह खानपान मौसम से प्रभावित रहते हैं जो कि हमें जीवन के प्रति नई दृष्टिकोण को पैदा करने में सहायक होते हैं। यहां पर कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है जिससे कि हमारे जीवन में एक सकारात्मक सोच व नई ऊर्जा का होना तय है।

1. त्योहार और उत्सव:

- तीज और हरियाली तीज राजस्थान, उत्तर प्रदेश, और बिहार में तीज का त्योहार मानसून के आगमन के स्वागत के रूप में मनाया जाता है। महिलाएं इस दौरान उपवास करती हैं, गीत गाती हैं और झूला झूलती हैं।
- *नाग पंचमी:* नाग पंचमी का त्योहार मानसून के दौरान नाग देवता की पूजा के रूप में मनाया जाता है। इसे विशेषकर भारत में मनाया जाता है।
- *ओणम:* केरल में ओणम त्योहार फसल की कटाई और नई फसलों की शुरुआत का प्रतीक है। यह पर्व दस दिनों तक चलता है और इसमें पारंपरिक नृत्य, खेल, और संगीत शामिल होते हैं।

2. कला और साहित्य:

- *लोक गीत और नृत्य:* मानसून पर आधारित लोक गीत

और नृत्य, जैसे "कजरी" और "सावन के गीत", उत्तर भारत में विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। ये गीत और नृत्य मानसून की सुंदरता और इसके महत्व को दर्शाते हैं।

- *कविता और साहित्य:* कई भारतीय कवियों और लेखकों ने मानसून को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। कालिदास की "मेघदूत" में मानसून का अद्वितीय वर्णन है।

3. परंपरागत रीति-रिवाज और अनुष्ठान:

- *विवाह और अन्य संस्कार:* मानसून का मौसम विवाह और अन्य धार्मिक संस्कारों के लिए शुभ माना जाता है। इस दौरान कई धार्मिक अनुष्ठान और रीति-रिवाज संपन्न होते हैं। कुछ क्षेत्रों में मानसून के आगमन पर पर्वत और नदियों की पूजा की जाती है, क्योंकि इन्हें जल और जीवन का स्रोत माना जाता है।

4. खान-पान:

- *मौसमी व्यंजन:* मानसून के मौसम में विशेष प्रकार के व्यंजन तैयार किए जाते हैं, जैसे पकौड़े, भुट्टा (भुना हुआ मकई), और गरम चाय। इनका आनंद बारिश के मौसम में लिया जाता है।
- *आयुर्वेदिक परंपराएँ:* आयुर्वेद में मानसून के दौरान विशेष प्रकार के आहार और जीवनशैली का पालन करने की सलाह दी जाती है, जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे।

5. सामाजिक और सामुदायिक जीवन:

- *गाँव की जीवनशैली:* ग्रामीण क्षेत्रों में मानसून का आगमन सामुदायिक जीवन में विशेष उत्साह और सक्रियता लाता है। खेतों में काम की शुरुआत, जल स्रोतों का पुनर्भरण और सामुदायिक आयोजन इस दौरान होते हैं।
- *लोक कहानियाँ और मान्यताएँ:* मानसून के मौसम से जुड़ी कई लोक कहानियाँ और मान्यताएँ हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं। इन कहानियों में देवताओं, परियों और अन्य अलौकिक तत्वों का वर्णन होताहै।

6. प्रेरणा का स्रोत:

- *चित्रकला और मूर्तिकला:* मानसून का मौसम कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। इस मौसम के दृश्य, जैसे बारिश, हरियाली, और बदलते आकाश, चित्रकला और मूर्तिकला में अक्सर दिखते हैं।
- *सिनेमा और संगीत:* भारतीय सिनेमा और संगीत में मानसून का विशेष स्थान है। कई फिल्में और गाने बारिश और मानसून की सुंदरता को दर्शाते हैं।

कुल मिलाकर देखा जाए तो मानसून का हमारे जीवन में लगभग अधिकांशत अंगों पर प्रभाव पड़ता है। कुछ नकारात्मक प्रभावों के चलते महत्वपूर्ण यह है कि हमारे सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं के लिए मानसून एक अभिन्न अंग है।

प्रोफ़ेसर विनोद नाथ
लेखक, शिमला

बादल के बीज

"नंदिनी, ओ नंदिनी! जल्दी आओ। स्कूल बस का समय हो गया है।" रीना ने रसोई से आवाज़ लगाई।

जब कोई जवाब न आया, रीना की आवाज़ में तीव्रता बढ़ी, "नंदू, बस निकल जाएगी। घड़ी-घड़ी रिक्शे पे पैसे खर्चना मुझे परवर्ता नहीं। अब निकलो।"

"आई, काहे इतनी घाई करती हो? पता नहीं क्यों बस या रिक्शे की मजबूरी है? स्कूल इतना पास है, चल के क्यों नहीं जाने देती?" नंदिनी खीज के बोली।

वो छोड़ो। तुम्हें इतनी देर क्यों लगी?" रीना ने नंदिनी को खाने का डब्बा और पानी की बोतल थमाते हुए पूछा।

"मेरे नभ पर बादल के बीज बोने गई थी," नंदिनी की आवाज़ मेंशरारत की खनखनाहट थी। इससे पहले कि रीना कुछ समझ पाती, "बाए" कह नंदिनी दरवाज़े से बाहर भाग गई।

रीना तवे पे रोटी डाल इस सोच में डूब गई कि नंदिनी को कैसे समझाए कि क्यों पैदल स्कूल जाने की मनाही है। 'एक सवाल का जवाब देते-देते सैंकड़ों का देना पड़ेगा।' खुद से तर्क-वितर्क करते रीना से रोटियाँ कुछ जल गईं। उसने ठीक बनी रोटियाँ नंदिनी के लिए कैसेरोल में रखीं और अपने ऑफिस के डिब्बे में अधजली रोटियाँ बाँध लीं।

घर की एक चाबी रीना के पास रहती और एक नंदिनी के पास। स्कूल से लौट नंदिनी खाना लेकर कुछ देर टीवी देखती और फिर पढ़ने बैठ जाती। बारहवीं कक्षा में थी। पढ़ाई के अलावा कोई रुझाव की फुर्सत नहीं थी।

"नंदू, कैसा रहा आज का दिन?" अक्सर दरवाज़ा खोल रीना का पहला प्रश्न यही रहता। जवाब के अंदाज़ से समझ लेती अगली बात कैसे करनी है।

पर एक बात तो थी, नंदिनी थी तो नंदिनी जैसी - आनन्दित करने वाली। इस बात का रीना समझ न पाती की खुद की परवरिश पर गुमान करे या नंदिनी की समय से पहले ज़िम्मेदारी सँभालने की। अच्छी सांझेदारी थी माँ-बेटी की। पर कोई दोराहे नहीं, किशोरावस्था आख़िर किशोरावस्था है, और उसको ज़्यादा आज़माना नहीं चाहिए, सो रीना उस देहलीज़ को कम ही लाँगती।

"आओ, देखो क्या लाई हूँ आज। वड़ा-पाओ!" रीना ने खाने की मेज़ पर प्लेटें रखते हुए आवाज़ दी।

"कहाँ से मिला?" नंदिनी की ख़ुशी का ठिकाना न था। उसने जवाब का इंतज़ार न कर, फटाफट लिफ़ाफ़ा खोला।

"आज ऑटो वाला नए रास्ते से लाया। वहीं एक ठेला गुज़र रहा था, उसपे कच्ची-दाबेली, वादा-पाओ, और मिसल भेल लिखा था। मैंने झट से ऑटो रुकवाया, और सभी चीज़ों के दो-दो पैक करवा लिए।" रीना ने खूब उत्साह से बताया।

"मज़ा आ गया, आई! दिल्ली में चोखा मुम्बईया स्वाद!"

नंदिनी आँखें बंद कर, ज़ायके का असीम आनंद लेते हुए बोली, "म-म-म... पता है आप दुनिया की सबसे अच्छी आई हो... म-म-म... ढेर सारा थैंक यू!"

नंदिनी की छोटी-छोटी ख़्वाहिशें पूरा कर रीना को बहुत सुकून मिलता।

भले ही शाम अच्छी गुज़री, नंदिनी के सुबह पूछे तंज़ कसे सवाल रीना को बेचैन कर रहे थे। 'जिन किस्सों को मैं अर्ब सागर में डुबो आई थी, वो फिर पहाड़ बन खड़े हो रहे हैं। क्या अभी बताना ठीक होगा या टाल-मटोल कर बारहवीं के इम्तेहान पूरे होने दूँ?' इसी कश्मकश में रात से भोर हुई।

शनिवार का दिन था और दोनों को छुट्टी भी।

नाश्ते में दोनों ने शाम का बचा खाना ख़तम किया। नंदिनी पढ़ने चली गई। रीना घर के कामों में व्यस्त हो गई।

कुछ देर बाद नंदिनी को दूध का ग्लास देने गई तो कमरा खाली था।

यकायक नंदिनी का कुछ दिनों से गायब होना रीना को झंझोल देता। उसको हमेशा डर लगा रहता कि कहीं उसका पति, किशोर, उन दोनों को ढूंढ न ले। किशोर ने चॉल में खोली के लिए मोटा कर्ज़ा उठाया पर समय रहते चुका न पाया। बदले में नंदिनी का विवाह तय कर दिया उस लेनदार से। रीना को नामंज़ूर था अपनी नन्ही सी बेटी का सौदा। वो नंदिनी को पढ़ा-लिखा कर कामयाबी की उचाईयों पर देखना चाहती थी। सो, भाग निकली अपनी आठ साल की बेटी संग। दिल्ली पहुँचकर कुछ हफ़्ते एक गुरद्वारे में ठहरी। उसको सत्यनिष्ठा व लगन से सेवा में जुड़े देख, एक परोपकारी सज्जन ने अपने घर के दो कमरों में शरण दी। रीना ने छोटी-मोटी नौकरी कर नंदिनी को पढ़ाना शुरू किया। खुद भी तकनीकी प्रशिक्षण लेना शुरू किया। करते-करते उसको स्टेनो की नौकरी मिल गई और नंदिनी को उस भले इंसान की मदद से मिशनरी स्कूल में दाखिला।

जैसे ही नंदिनी ने कमरे में प्रवेश किया, रीना ने गुस्से में पूछा, "कहाँ गायब हो गई थी?"

"अपने नभ पर डाले बादलों के बीजों को सींचने गई थी," नंदिनी ने चुलबुला सा जवाब दिया।

"ये क्या लगा रखा है बादलों के बीज-वीज?" रीना ने व्यग्रता से पूछा।

"ओहो आई, मैं आपको सरप्राइज़ देना चाहती थी आपके जन्मदिन पर। नित आपकी व्याकुलता अब मुझसे देखी नहीं जाती। चलो दिखाती हूँ।" नंदिनी रीना को घर के पिछले आँगन में टीन से बने छोटे से स्टोर के पास ले गई।

वहाँ से नंदिनी ने एक कैनवास निकाला जिसपर उसने माँ और बेटी की खूबसूरत तस्वीर बनाई थी - ऊपर नीला आसमान, आसमान में पतंगें व इंद्रधनुष, और पैरों में ढेरों रंग-बिरंगे फूल।

"यह हम दोनों हैं। आप मेरा नीला आसमान हो जिसमें मेरे सतरंगी सपनों को ऊँची उड़ान मिलती है।"

रीना दंग थी नंदिनी की कलाकारी देखकर। "बहुत सुंदर है। पर इसमें बादल कहाँ हैं जिनके बीजों की तुम बात करती हो?"

"माँ, वो जो खिड़की के नीचे दो गमले हैं, उनमें मैंने सफ़ेद गुलाब की बेलें लगाई हैं। देखो, पौधे निकल आए हैं। जब उनमें फूलों के गुच्छे लगेंगे तो खिड़की के अंदर से देखने पर आसमान में घूमते बादलों से लगेंगे। और आप जानते हो बादल सुकून और छाँव देते हैं। मैं आपके लिए वो सुकून और छाँव का माध्यम बनना चाहती हूँ। सारे जहान को बताना चाहती हूँ कि मेरी आई दुनिया की सबसे अच्छी माँ है। मैं नहीं जानती कि आपने मुंबई क्यों छोड़ा, पर इतना समझती हूँ कि आपने वो फ़ैसला बहुत सोच-समझकर लिया होगा। आप जब बताने को तैयार होगे, तभी बताना, मैं विवश नहीं करूँगी।" नंदिनी के यह बोलते दोनों की आँखें भर आईं और रीना ने उसे आलिंगन में ले लिया।

रीना को उन नन्हे पौधों में बादल-से फूल दिखने लगे थे।

डॉ. सुनीत मदान
लेखिका, चंडीगढ़

चंडीगढ़ लिटरेरी सोसायटी द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिता में
प्रथम स्थान प्राप्त किया है डॉ रितु भनोट द्वारा लिखी कविता धरती ने ।

धरती

मुझे माफ़ करना अम्मा,
देहरी से विदा करते हुए
तुमने जो सीख मेरे आँचल से बाँधी थी,
हर्फ़-दर-हर्फ़ याद है मुझको ।
अपने सीने से लगाकर
कितने कातर भाव से कहा था तुमने
-लड़कियां धरती होती हैं,
उफ़ नहीं करती,
चुपचाप सहती हैं ।
तुम्हारी सौगंध अम्मा,
मैंने कितना चाहा कि
तुम्हारी कही हर बात
मन के आईने में उतार लूं,
लेकिन क्या करूँ?
सालों से चुप रहते-रहते,
होंठ ही नहीं,
मेरी आत्मा भी पथरा गई है ।
मैं जानती हूँ कि
पत्थर में तब्दील हो जाना
औरत का इतिहास है ।
मैं इतिहास दोहराना नहीं
बदलना चाहती हूँ ।
इतिहास बदलने के लिए
आवाज उठानी पड़ती है ..
पर मैं जब-जब कुछ कहना चाहती हूँ,
मुँह से आवाज नदारद पाती हूँ ।
मेरी आवाज
मन की चारदीवारी से टकराकर
वैसे ही हार जाती है
जैसे पिंजरे में कैद चिड़िया
आजाद तो नहीं हो पाती
घायल जरूर हो जाती है ।
मेरे आँचल की गाँठ खोलकर
मुझे मुक्त कर दो अम्मा !
लौटा दो मुझे मेरी खोई हुई आवाज ,
कि गूंगी रिवायतों की विरासत की जगह
बेफ़िक्र ठहाकों की घुट्टी,
ममता के शहद में घोलकर
उसे पिला सकूँ-
जो उम्मीद भरी नज़रों से
मेरी तरफ़ देखते हुए,
ज़िन्दगी की देहलीज़ पर
पाँव धर रही है,
देखो अम्मा !
मेरी कोख में भी
एक धरती पल रही है ।

डॉ रितु भनोट
चंडीगढ़

आभास

दिसम्बर 2024 अंक के लिए रचनाएं आमंत्रित है।

जाड़े की गुनगुनी धूप

आप अपना लेख निम्नलिखित रूप में भेज सकते हैः

लघु कहानी (अधिकतम 750 शब्द)

निबंध (अधिकतम 550 शब्द)

कविताएँ (अधिकतम 20 पंक्तियाँ)

फ्लैश फिक्शन, कलाकृति, फोटो निबंध

पुस्तक/फिल्म समीक्षाएँ

भित्तिचित्र आदि

रचनाएँ भेजने की अंतिम तिथि 28 अक्टूबर है।

कृपया अपनी रचनाएँ नीचे दिए गए ई मेल पर भेजें

aabhaasdesk@gmail.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः

rhyvers.in/aabhaas

78300 15300

SHREE GURU GOBIND SINGH TRICENTENARY UNIVERSITY
LEADERSHIP • INNOVATION • ETHICS
SGT UNIVERSITY
NURTURING FUTURE LEADERS
nirf
Ranked Amongst TOP 100 Pharmacy Colleges in India - 2022
NITI Aayog
ATAL INNOVATION MISSION
acic
SGTU
MC-4320
PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
ACCREDITED
QS I·GAUGE
INDIAN UNIVERSITY RATING
DIAMOND
MC-3439
21 YEARS LEGACY IN EDUCATION
70+ ACRE POLLUTION FREE, SELF-SUSTAINED CAMPUS
SCHOLARSHIPS FOR MERITORIOUS STUDENTS
EXPRESSWAY CONNECTIVITY FROM AIRPORT
18 FACULTIES
9200+ STUDENTS
800+ TEACHERS
UPTO
100%
SCHOLARSHIP
www.sgtuniversity.ac.in
1800 102 5661
admissions@sgtuniversity.org
Budhera, Gurugram-Badli Road, Gurugram (Haryana) -122505 Phone : 0124-2278183-85
"The Admission Procedure/Reservation of Seats/Fee Concession will be governed as per the Sections 35 and 36 of the Haryana Private Universities Act, 2006"